150th Birth Anniversary of Vijay Vallabh Surishwer

Jainism is one of the ancient religions of India, and is an integral part of Indian culture. Jainism teaches that the path to enlightenment is through nonviolence and reducing harm to living things (including plants and animals) as much as possible.

Life of Vijay Vallabh Surishwer is an example of humanism and spiritualism. He was born at Vadodara on 26 October, 1870 to Deepachand Icchabai. In search of peace and salvation of soul, he studied under his holiness Jain Acharya Shree Vijayanand Suriji, popularly known as Guru Atmaramji, a highly venerated Saint and a profound scholar of Jainism. Chhagan (his childhood name) entered monkhood, renouncing worldly life in 1887 at Radhanpur (Gujarat). He was christened as Muni Vallabh Vijay.

Guru Atmaramji taught Vijay Vallabh, the Jain philosophy propounded by Lord Mahavir viz Ahimsa (non-violence), Anekant (non-absolutism), Aparigraha (non-possessiveness). Vijay Vallabh also mastered study of contemporary religions. His Guru ordained Vijay Vallabh to set up, not only places of worship, but also educational institutions and service centres which would help both men and women to understand religion in its true perspective.

True to his Guru, Vijay Vallabh worked for the welfare of the society irrespective of caste, class and creed. He initiated various programmes to eradicate ignorance, superstition and illiteracy. His humane approach, scientific outlook and practical life endeared him to the masses. He was bestowed with Acharyaship in 1924 at Lahore (now in Pakistan).

He placed before the mankind, both by precept and practice, the highest moral and spiritual values of life. He widely traveled barefooted as enjoined on Jain Monks, many times all-over Maharashtra, Gujarat, Saurashtra, Rajasthan, U.P., M.P., Punjab and Jammu & Kashmir to spread this message.

This visionary Saint, realizing the prime needs of the society emphasized on giving moral and righteous education to improve standard of life. He laid special emphasis on the education of women. He motivated the society to establish a large number of schools, colleges, gurukuls, libraries and centres of craft and learning in many parts of the country. Opening of Shri Mahavira Jain Vidyalay at Mumbai as far back as 1915 and its subsequent branches, Shri Atmanand Jain Gurukul at Gujranwala and Shri Atmanand Jain College at Ambala are just but a few of the glorious examples.

Vijay Vallabh was an exponent of research work. He became instrumental in collecting and preserving thousands of volumes of priceless handwritten manuscripts and published works on Indology at Shri Mahavira Jain Vidyalaya, Mumbai and Jain Gurukul Gujranwala and othe libraries as valuable storehouse of knowledge and cultural heritage. He advised to marshal the existing knowledge within the framework of modern research.

Vijay Vallabh aroused people from slumber wherever he went during the freedom movement. Identifying himself with the freedom struggle, he wore khadi throughout his life. He was a patriot to the core. Swadeshi found an echo in his speeches.

Vijay Vallabh strongly deprecated display of wealth and extravagance on social occasions, dowry and such other evils. Though born in Gujarat, he always promoted Hindi as national language. He was a renowned orator, author and poet. In addition to several works in prose, he wrote about 4000 poems, songs and hymns in Hindi, rich both in language and content.

Vijay Vallabh came into contact with great patriots of the nation like Mahatma Gandhi, Pandit Motilal Nehru, Shri Morarji Desai, Lala Lajpat Rai, Pandit Madan Mohan Malviya and other stalwarts of the freedom movement and luminaries of pre and post independence era. He supported Satyagraha and non-cooperation as potent yet non-violent tools to achieve independence. His formula for World peace was highly appreciated by Shri Morarji Desai and the then Prime Minister Shri Jawahar Lal Nehru.

For the all round development of the society, he had, in fact, made Shiksha (education), Seva (service), Sangathan (unity), Sahitya (literature) and Swavlamban (self-reliance) as his creed and mission of life.

Vijay Vallabh breathed his last at Mumbai in September 1954 where a Smadhi Mandir has been built in Byculla. A mulifaceted grand memorial was later constructed at Delhi comprising of a Jain Temple, Guru Mandir, Research Institute, School, Museum of Jain Art, Birds Hospital and matching infrastructure, which apart from being a sacred devotional centre also works for taking Guru Vallabh's Mission further.

India Post is pleased to issue Commemorative Postage Stamp on Vijay Vallabh Surishwer and appreciates his contribution to serve millions through spirituality, education and nation building

Credits:

Stamp/FDC/Brochure	:	Anuj Zood
Cancellation Cachet	:	Mrs Nenu Gupta
Text	:	Vallabh Smarak, Delhi

डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS

विजय वल्लभ सूरीश्वर की 150वीं जयंती
150th Birth Anniversary of Vijay Vallabh Surishwer

विवरणिका **BROCHURE**

विजय वल्लभ सूरीश्वर की 150वीं जयंती

जैन धर्म, भारत के सबसे प्राचीन धर्मों में से एक है, तथा भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है। जैन धर्म यह शिक्षा देता है कि अहिंसा और जहां तक संभव हो, जीवों (जिसमें पेड़–पौधें और पशु–पक्षी भी शामिल हैं) को क्षति न पहुंचा कर ही मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है।

विजय वल्लभ सूरीश्वर का जीवन, मानवता और आध्यात्मवाद का श्रेष्ठ उदाहरण है। इनका जन्म 26 अक्तूबर, 1870 को वडोदरा में दीपचंद तथा इच्छाबाई के यहां हुआ। विजय वल्लभ सूरीश्वर ने, शांति और निर्वाण की तलाश में परमपूज्य संत तथा जैन धर्म के महान विद्वान, जैन आचार्य श्री विजयानंद सूरि जी से शिक्षा–दीक्षा ली। विजयानंद जी को गुरू आत्माराम जी के नाम से भी जाना जाता है। छगन (विजय वल्लभ का बचपन का नाम) ने वर्ष 1887 में राधनपुर (गुजरात) में सांसारिक सुखों का त्याग करते हुए मुनि जीवन अपनाया। उन्हें मुनि वल्लभ विजय का नाम दिया गया।

गुरू आत्मारामजी ने विजय वल्लभ को भगवान महावीर द्वारा बताए गए जैन दर्शन, अर्थात् अहिंसा, अनेकांत और अपरिग्रह की शिक्षा प्रदान की। विजय वल्लभजी ने समकालीन धर्मों का भी गहन अध्ययन किया। गुरू जी ने विजय वल्लभ को न केवल पूजा के स्थान अपितु शैक्षिक संस्थाएं तथा सेवा सदन खोलने के लिए भी प्रेरित किया, जो पुरुष एवं महिलाओं, दोनों को, धर्म को सही परिप्रेक्ष्य में समझने में मदद कर सकें।

गुरू जी के बताए मार्ग पर चलते हुए, विजय वल्लभजी ने जाति, वर्ग एवं संप्रदाय से ऊपर उठकर समाज के हित में कार्य किया। उन्होंने अज्ञानता, अंधविश्वास एवं निरक्षरता को समाप्त करने के लिए अनेक कार्यक्रमों की शुरूआत की। उनके मानवतावादी विचार, वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा व्यावहारिक जीवन ने उन्हें जनमानस में लोकप्रिय बना दिया। विजयवल्लभ को 1924 में लाहौर (अब पाकिस्तान में स्थित) में आचार्य की उपाधि प्रदान की गई।

विजय वल्लभ सूरीश्वर जी ने अपने दार्शनिक दृष्टिकोण और आचार–व्यवहार से मानवजाति के समक्ष उच्च नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का उदाहरण प्रस्तुत किया। उन्होंने मुनियों को प्राप्त धर्मोपदेश के अनुरूप, नंगे पैर चलकर संपूर्ण महाराष्ट्र, गुजरात, सौराष्ट्र, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, पंजाब और जम्मू व कश्मीर राज्यों की कई बार यात्रा की और अपने संदेश को दूर–दूर तक पहुंचाया।

इस दूरदर्शी महान द्रष्टा संत ने, समाज की मूल आवश्यकताओं को समझते हुए, जीवन में सुधार हेतु नैतिक एवं धार्मिक शिक्षा पर जोर दिया। उन्होंने महिलाओं की शिक्षा पर भी विशेष रूप से बल दिया। उन्होंने देश के विभिन्न भागों में बड़ी संख्या में विद्यालय, कॉलेज, गुरुकुल, पुस्तकालय और शिल्पकला एवं शिक्षा के अन्य केंद्रों की स्थापना हेतु समाज को प्रेरित किया। 1915 में मुंबई में श्री महावीर जैन विद्यालय और उसके बाद इसकी शाखाएं तथा गुजरांवाला में श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल तथा अम्बाला में श्री आत्मानन्द जैन कॉलेज की स्थापना, इसके कुछेक शानदार उदाहरण हैं।

विजय वल्लभ महान शोधकर्ता भी थे। उन्होंने, हजारों की संख्या में अमूल्य हस्तलिखित पांडुलिपियों और भारत–विद्या विषय पर प्रकाशित पुस्तकों को एकत्रित किया और श्री महावीर जैन विद्यालय, मुंबई और जैन गुरुकुल, गुजरांवाला और अन्य पुस्तकालयों में सहेज कर रखा और इस प्रकार, इन पुस्तकालयों को ज्ञान और सांस्कृतिक विरासत का भंडार बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका मानना था कि इन पुस्तकालयों में मौजूद ज्ञान का प्रयोग आधुनिक शोध की आवश्यकताओं के अनुरूप किया जाए।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान विजय वल्लभ ने जिन स्थानों की यात्रा की, वहां उन्होंने अपने आह्वान से लोगों को जागृत किया। स्वयं को स्वतंत्रता आंदोलन से जोड़ते हुए श्री वल्लभ ने आजीवन खादी ही पहनी। वे सच्चे देशभक्त थे तथा उनके भाषणों में स्वदेशी की गूंज सुनाई पड़ती थी।

विजय वल्लभ, सामाजिक अवसरों पर धन–दौलत और दिखावे के साथ–साथ दहेज और ऐसी ही अन्य बुराइयों के घोर विरोधी थे। यद्यपि उनका जन्म गुजरात मे हुआ, फिर भी उन्होंने हमेशा राष्ट्र भाषा के रूप में हिंदी को बढ़ावा दिया। वे एक प्रख्यात वक्ता, लेखक एवं कवि भी थे। व्यापक गद्य लेखन के अलावा उन्होंने हिंदी में लगभग 4000 कविताएं, गीत एवं भजन भी लिखे, जो भाषा और विषय–वस्तु, दोनों की दृष्टि से समृद्ध हैं।

विजय वल्लभ, स्वतंत्रता–पूर्व और बाद के अनेक दिग्गजों तथा स्वतंत्रता आंदोलन के पुरोधाओं जैसे महात्मा गांधी, पंडित मोतीलाल नेहरू, श्री मोरारजी देसाई, लाला लाजपत राय, पंडित मदन मोहन मालवीय और अन्य के संपर्क में रहे। उन्होंने आजादी के लिए सत्याग्रह एवं असहयोग जैसे प्रभावी परंतु अहिंसक साधनों पर बल दिया। विश्व शांति के लिए उनके फार्मूले को श्रीमोरारजी देसाई एवं तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू द्वारा अत्यंत सराहा गया।

समाज के चहुंमुखी विकास के लिए उन्होंने शिक्षा, सेवा, संगठन, साहित्य एवं स्वावलंबन को अपना ध्येय एवं जीवन का मिशन बना लिया।

विजय वल्लभ ने सितंबर 1954 में मुंबई में अंतिम सांस ली। बामखला स्थित इस स्थान पर एक 'समाधि मंदिर'बनाया गया है। बाद में, दिल्ली में एक भव्य स्मारक बनाया गया, जिसमें जैन मंदिर, गुरू मंदिर, शोध संस्थान, स्कूल, जैन कला संग्रहालय, पक्षियों का अस्पताल और ऐसे अन्य इंफ्रास्ट्रक्चर हैं। यह स्मारक, एक पवित्र धार्मिक केन्द्र होने के साथ ही गुरु वल्लभ के मिशन को और आगे ले जाने की दिशा में कार्यरत है।

भारतीय डाक, आध्यात्म, शिक्षा एवं राष्ट्र निर्माण के माध्यम से करोड़ों लोगों की सेवा करने वाले विजय वल्लभ सूरीश्वर जी के योगदान को रेखांकित करते हुए स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार : -

डाक–टिकट / प्रथम दिवस आवरण / विवरणिका : अनुज जुड़

विरूपण कैशे : श्रीमती नीनू गुप्ता

पाठ : वल्लभ स्मारक, दिल्ली

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

डाक टिकट का मूल्य	: 500 पैसे
Denomination of Stamp	: 500 p
मुद्रित डाक–टिकटें	: 451600
Stamps Printed	: 451600
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY 3D.html

मूल्य ₹ 5.00